## * पाठ्यक्रम की आवश्यकता तथा महत्व :-

* पाठ्यक्रम के द्वारा छात्र सामाजिक गतिविधियों से जुड़ता है।
* पाठ्यक्रम के द्वारा व्यक्तिगत और सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ती की जाती है।
* पाठ्यक्रम के द्वारा आर्थिक राजनैतिक, सांस्कृतिक धार्मिक उद्देश्यों की पूर्ती की जाती है।
* पाठ्यक्रम के द्वारा निश्चित समय में निश्चित ज्ञान प्रदान किया जाता है।
* पाठ्यक्रम होने से मूल्यांकन कि प्रक्रिया सम्भव हो पाती है।
* शिक्षा को सोद्देश्यपूर्ण बनाने में महत्वपूर्ण है।
* वृत्तों के सर्वांगीण विकास हेतु आवश्यक है।
* पाठ्यक्रम के अभाव में औपचारिक शिक्षा सम्भव नहीं है।
* राष्ट्रीय एकता एवं अंतरराष्ट्रीय सद्भाव में वृद्धि हेतु।
* बालक तथा बालिका के मध्य चली आ रही रूढ़ीगत सामाजिक कुरीतियों को समाप्त व उनमें जागरूकता लाने हेतु आवश्यक है।
* पाठ्यक्रम के अभाव में सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था पतवारविहीन नौका के समान हो जायेगी।

Scanned with CamScanner

## * पाठ्यक्रम की आवश्यकता तथा महत्व :-

* पाठ्यक्रम के द्वारा छात्र सामाजिक गतिविधियों से जुड़ता है।
* पाठ्यक्रम के द्वारा व्यक्तिगत और सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति की जाती है।
* पाठ्यक्रम के द्वारा आर्थिक राजनैतिक, सांस्कृतिक धार्मिक उद्देश्यों की पूर्ति की जाती है।
* पाठ्यक्रम के द्वारा निश्चित समय में निश्चित ज्ञान प्रदान किया जाता है।
* पाठ्यक्रम होने से मूल्यांकन कि प्रक्रिया सम्भव हो पाती है।
* शिक्षा को सोद्देश्यपूर्ण बनाने में महत्वपूर्ण है।
* छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु आवश्यक है।
* पाठ्यक्रम के अभाव मे औपचारिक शिक्षा सम्भव नहीं है।
* राष्ट्रीय एकता एवं अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव मे वृद्धि हेतु।
* बालक तथा बालिका के मध्य चली आ रही रुढ़ीगत सामाजिक कुरीतियों को समाप्त व उनमें जागरुकता लाने हेतु आवश्यक है।
* पाठ्यक्रम के अभाव मे सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था पतवारविहीन नौका के समान हो जाएगी।

Scanned with CamScanner

पाठ्यक्रम निर्माण के आधार :—

(1) दार्शनिक आधार
(2) मनोवैज्ञानिक आधार
(3) सामाजिक आधार
(4) तकनीकि तथा मनोवैज्ञानिक आधार

* दार्शनिक आधार :— दर्शन पाठ्यक्रम निर्माण के आधार के रूप में कार्य करता है। दर्शन उन प्रश्नों का उत्तर प्रदान करता है जो विज्ञानादि से भिन्न हैं। दर्शन अमूर्त विषयों और अनसुलझे प्रश्नों के उत्तर प्रदान करता है।

प्राचीन भारतीय दर्शन निम्न है।

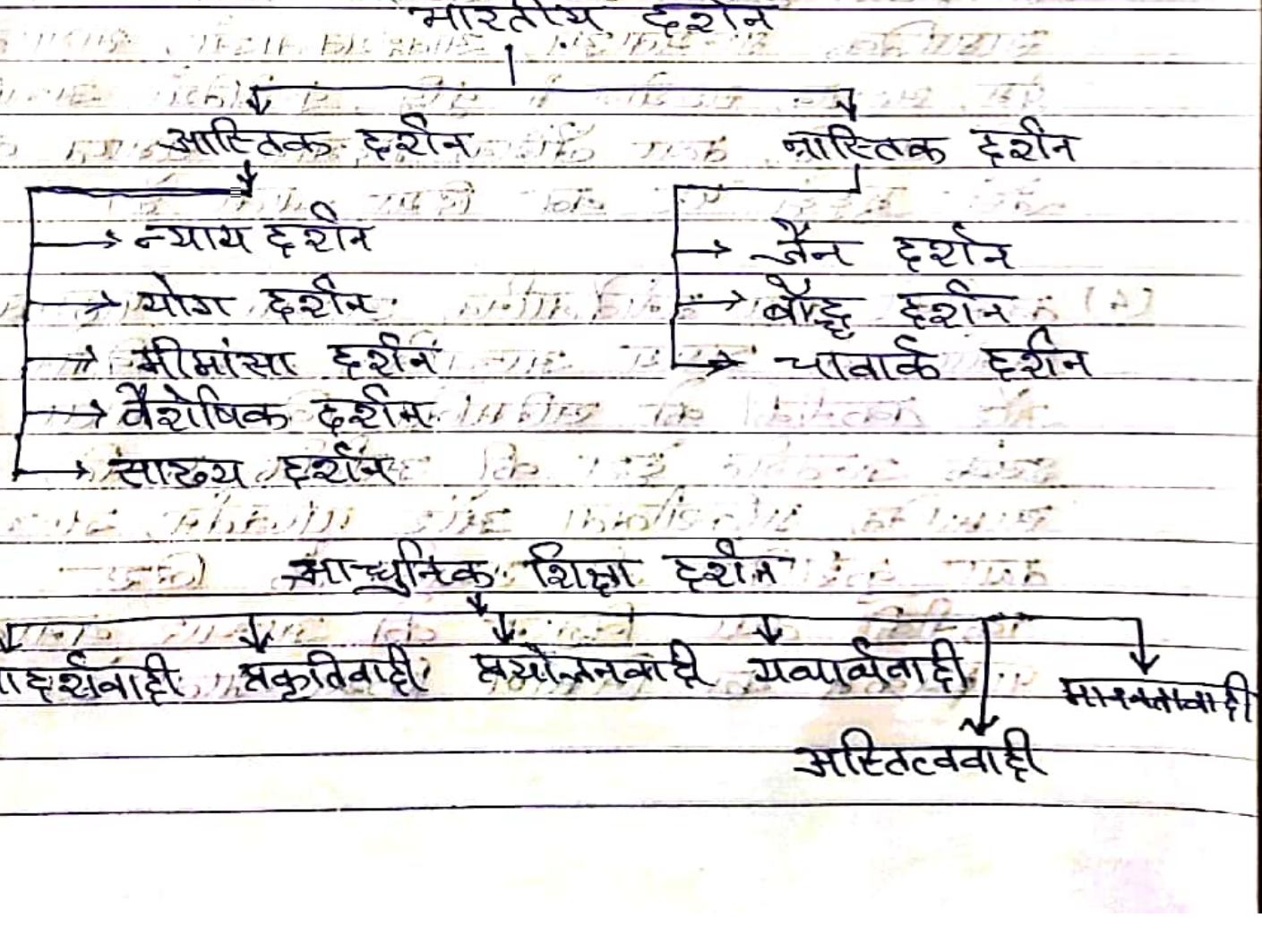


Scanned with CamScanner

(2) मनोवैज्ञानिक आधार :- शिक्षा प्रक्रिया रुचिकर और सहज बनाने हेतु मनोविज्ञान कि आवश्यकता होती है। पाठ्यक्रम मे व्यक्तिगत रुचियों तथा भिन्नता, शिक्षण विधियों, मूल्यांकन एवं मापन, अनुशासन, विद्यालयी समय सारणी एवं स्वरूप निर्धारण मे भी मनोविज्ञान की आवश्यकता होती है। अतः मनोविज्ञान के विकास के कारण ही बालकेन्द्रित शिक्षा पद्धति का विकास हुआ है।

(3) सामाजिक आधार :- विद्यालय समाज का लघु स्वरूप होता है तथा शिक्षा समाज का पूरक होता है। पाठ्यक्रम निर्माण मे सामाजिक मान्यताओं, आवश्यकताओं, सामाजिक प्रेम, सद्भाव, सहयोग मे वृद्धि, कुरीतियों, अंधविश्वासों की समाप्ति, तथा लैंगिक भेदभाव समाप्त करने जैसे मुद्दों पर बल दिया जाता है।

(4) तकनीकी तथा मनोवैज्ञानिक आधार :- पाठ्यक्रम निर्माण के समय आधुनिक ज्ञान विज्ञान और तकनीकी को सम्मिलित किया जाता है। इसके अन्तर्गत देश की आर्थिक प्रगति, सामाजिक गतिशीलता और परिवर्तन, अन्धविश्वास तथा कुरीतियों की समाप्ति के लिए तकनीकी तथा विज्ञान को आधार बनाकर पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है।

Scanned with CamScanner